BEd. IInd year

Knowledge language and curriculum

V.V.M. Imp

Topic :- पठन का स्कीमा सिद्धान्त
Schema Theory of Reading

स्कीमा सिद्धान्त की अवधारणा सर्वप्रथम सन् 1926 मे जीन पियाजे ने प्रस्तुत की। सन् 1932 मे बार्टलेट ने मनोविज्ञान मे इस पद का प्रयोग किया लेकिन इस सिद्धान्त को पूर्ण रूप से विकसित करने का कार्य प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक रिचर्ड एंडरसन ने सन् 1970 मे किया। सन् 1980 मे रूमेलहर्ट ने, सन् 1981 मे कोरेल ने और सन् 1982 मे हडसन ने स्कीमा सिद्धान्त को पठन से जोड़ा। स्कीमा सिद्धान्त पूर्व क्रियाओ व अनुभवो का सक्रिय संगठन है।

यह सिद्धान्त व्यक्ति के पूर्व ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर उसकी आन्तरिक वास्तविकता को व्यक्तिगत रूप से सरलीकृत करके उपस्थित करता है।

रिचर्ड एंडरसन के अनुसार :— "स्कीमा ज्ञान का एक सार है, संरचना है। जहाँ मानसिक स्मृति द्वारा प्रतिनिधित्व करके सभी सूचनाओं को संग्रहीत किया जाता है।"

P.T.O.

* स्कीमा सिद्धान्त की प्रमुख विशेषताएँ *

⇒ स्कीमा मानसिक संरचनाएँ हैं।
⇒ स्कीमा में किसी वस्तु या सूचना की व्याख्या होती है।
⇒ स्कीमा का निर्माण अनुभवों पर आधारित होता है।
⇒ स्कीमा का स्वरूप व्यक्ति की संस्कृति के द्वारा निर्धारित होता है।
⇒ स्कीमा का स्वरूप आत्म-सम्पुष्टक (Self Confirming) होता है।

* स्कीमा के प्रभाव *

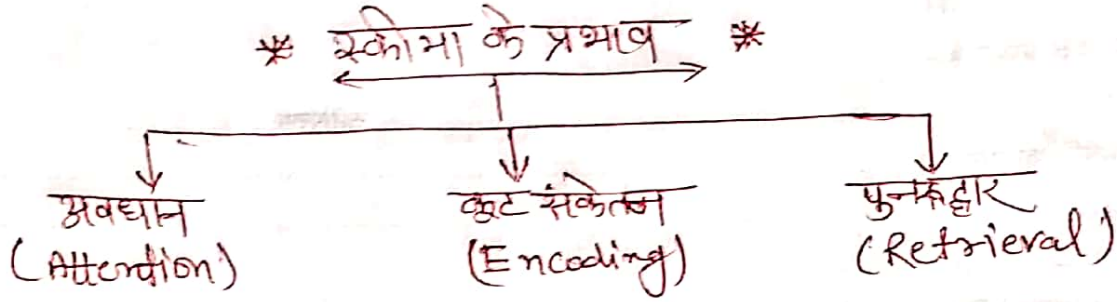

* अवधान का अर्थ किसी सूचना या वस्तु का बोध करने से है। कूट संकेतन का अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा व्यक्ति सूचना को स्मृति में भण्डारित करते हैं. और पुनर्स्मरण का अवस्मृति में भण्डारित सूचनाओं को आवश्यकतानुसार उपयोग करने से है।

* स्कीमा के प्रकार :-

(1). वैचारिक स्कीमा (conceptual schema)
(2). सामाजिक स्कीमा (Social schema)
(3). औपचारिक स्कीमा (Formal schema)
(4) पाठ्यवस्तु स्कीमा (Content schema)
(5). सांस्कृतिक स्कीमा (Cultural schema)
(6). सामग्री स्कीमा (material schema)
(7). भाषायी स्कीमा (Language schema)

P.T.O.

Scanned with CamScanner

* पठन की स्कीमा सिद्धान्त की अवधारणाएँ *

⇒ लिखित पाठ्यवस्तु का स्वंय मे कोई अर्थ नही होता।

⇒ लिखित पाठ्यवस्तु अधिगमकर्त्ता को दिशा निर्देश प्रदान करती है।

⇒ अपने पूर्व अनुभवो के आधार पर पाठ्यवस्तु का अर्थ ग्रहण किया जाता है।

⇒ पूर्व मे संचित ज्ञान को स्कीमेटा कहते है।

⇒ ये अति सामान्य से अति विशिष्ट की ओर होते हैं।

⇒ पठन बोध दो प्रकार से सक्रिय होता है।
(i) नीचे से ऊपर
(ii) ऊपर से नीचे ।

* पठन के स्कीमा सिद्धान्त की विशेषताएँ *

⇒ पठन, अधिगम कर्ता और लेखक के मध्य प्रस्तुत क्रिया है।

⇒ सूचना का अर्थापन व्यक्ति के जीवन के पूर्व अनुभवों के आधार पर होता है।

⇒ व्यक्ति के ज्ञान का स्रोत दीर्घकालीन स्मृति है।

⇒ यह मूर्त ज्ञान को अमूर्त ज्ञान से जोड़ता है।

⇒ यह पूर्व ज्ञान के आधार पर संज्ञानात्मक संरचनाओं का निर्माण करता है।

⇒ समस्त ज्ञान कुछ इकाइयों मे, तत्पश्चात समूह मे परिवर्तित हो जाता है।

⇒ यह वर्तमान के अनुभवों को समझने मे सहायक होता है।

⇒ यह व्यवहारिक अभिक्रियाओं करने मे सहायक/सक्षम है।

P.T.O.

* पठन के स्कीमा सिद्धान्त के कार्य *

(I). पूर्वगामी कार्य
(II). पूरक कार्य
(III). चयनात्मक कार्य

* पठन की स्कीमा सिद्धान्त की उपयोगिता *

⇒ सभी स्तरो के अधिगमकर्त्ताओ मे अमूर्त ज्ञान को मूर्त रूप प्रदान करने मे साहयता करता है।

⇒ अधिगमकर्त्ताओ के नवीन ज्ञान का पूर्व ज्ञान से सम्बन्ध स्थापित करने मे उनकी साहयता करता है।

⇒ अधिगमकर्त्ताओ की नवीन परिस्थितियो मे मस्तिष्क मे पहले से संगृहीत बातो का स्मरण कराता है।

⇒ अधिगमकर्त्ताओ को विषयो की समझ एवं जानकारी प्राप्त करने मे साहयता करता है।

⇒ अधिगमकर्त्ताओ को दूसरी भाषा सीखने मे साहयता करता है।

⇒ अधिगमकर्त्ताओ को गणितीय समस्याओ के समाधान मे साहयता करता है।

⇒ अधिगमकर्त्ताओ की सीखने की गति और बौद्धिक विकास तथा अनुभव प्राप्ति मे साहयता करता है।

⇒ अधिगमकर्त्ताओ के पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान के रूप मे विकसित करने मे साहयता प्रदान करता है।

⇒ यह सिद्धान्त पठन की रणनीति तैयार करता है और उसके बाद अधिगम लक्ष्यो को पूर्ण करने के लिए पूर्वावलोकन करता है।

Thank you

by
Mr. Parveen Raj
Assis. Prof.
B.R.C. Deoband
SRE

Scanned with CamScanner